विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं समावेशन

सुधीर कुमार तिवारी
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा महाराष्ट्र–442001
Email: tiwarig.sudheer@gmail.com

सारांश– *विद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं के साथ स्वीकार करना समावेशी शिक्षा की उपलब्धि है और साथ–ही–साथ चुनौती भी क्योंकि विकलांगता शारीरिक रूप से कम सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक प्रभावित करती है। उचित प्रशिक्षण एवं कुशल निरीक्षण द्वारा किसी भी व्यक्ति की योग्यता में (वह क्या कर सकता है) ऊर्ध्वमुखी विकास किया जा सकता है और समाज को उसकी योग्यताओं से लाभांवित किया जा सकता है। रूजवेल्ट, हेलेन केलर, स्टीफन हॉकिंग, अल्बर्ट आइंस्टीन, थॉमस अल्वा एडिसन, लूई ब्रेल... जैसे वास्तविक किरदार हमारे सम्मुख उदाहरण के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं जो दिव्यांग होते हुए भी समाजिक उत्थान के लिए सक्रिय रहे। स्टीफन हॉकिंग और हेलेन केलर, क्रमशः एक व्हील चेयर पर आश्रित महान वैज्ञानिक तो दूसरी मूक–बधिर लेकिन विश्व की महान लेखिकाओं में से एक है। अल्बर्ट आइंस्टीन में सीखने की क्षमता कम थी फिर भी उन्होंने सापेक्षता का सिद्धान्त विकसित किया। थॉमस अल्वा एडिसन ऊँचा सुनते थे लेकिन बिजली का अविष्कार करके संसार को प्रकाशवान कर दिया। लूई ब्रेल देख नहीं सकते थे लेकिन उनकी खोज ने दुनियां के दृष्टिबाधित दिव्यांगों को पढ़ने और सीखने की क्षमता दी। इन लोगों ने अपनी प्रतिभा को सिद्ध किया। जरूरत है दिव्यांगजनों को एक सही मार्गदर्शन की जो उन्हें कक्षा–कक्ष में प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। प्रस्तुत शोध लेख दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया एवं समावेशन में भाषा शिक्षण एवंप्रशिक्षण की भूमिका पर आधारित है।*

समावेशी शिक्षा वह प्रक्रिया है जहाँ प्रशिक्षक एवं विद्यार्थी एक ऐसा सकारात्मक वातावरण बनाने के लिए एक साथ काम करते हैं जिसमें प्रत्येक छात्र की योग्यता को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य का क्रियान्वयन किया जाता है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी को सीखने के लिए एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है।इस प्रकार समावेशी कक्षाओं द्वारा शिक्षक एवं छात्र दोनों की समान भागीदारी और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा दिया जाता है। समावेशी शिक्षा अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच की कड़ी को मजबूत करती है जिससे छात्रों के ज्ञान का विकास होता है। समावेशी शिक्षा कक्षाओं में ऐसे वातावरण का निर्माण करती है जिससे बच्चे स्कूली शिक्षा के साथ साथ अन्य सामाजिक गतिविधियों से जुड़ जातें हैं। समावेशी शिक्षा द्वारा सभी छात्रों की योग्यता का विकास किया जाता हैं जिससे वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें क्योंकि 'समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें मूल्यों,ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों में प्रक्रियाओं और संरचनाओं के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों और प्रथाओं के सृजन के माध्यम से बुनियादी मानव और शारीरिक संवेदनशील, बौद्धिक या स्थिति–जन्य हानियों के साथ सभी नागरिक अधिकारों को प्राप्त किया जाता है। योजना (2016).

एक समावेशी वातावरण– कक्षा के दौरान छात्रों के साथ बात करते समय, सेमेस्टर के पहले दिन से ही स्पष्ट रूप से संवाद करना शुरू करें और उनकी योग्यता एवं रूचियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिएद्यकक्षा–कक्ष में सम्मानजनक आपसी वार्तालाप के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना जैसे कि विद्यार्थियों के विचारों एवं सवालों के योगदान के लिए एक दिशानिर्देश और विचारों और प्रश्नों के लिए सम्मानपूर्वक जवाब देना चाहिए, जिससे सभी को सीखने, समझने एवं एक–दूसरे को स्वीकार करने एवं विद्यालय के वातावरण को प्रभावी बनाया जा सके।"असल में हमें खुद ही अपनी अक्षमता से लड़ने की जरूरत है, जो हमें खास जरूरत वालों के बारे में सोचने से रोकता है।" शाह (2017).

सीखने में विकलांगता के साथ बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियां उनकी विकलांगता के कारण नहीं हैं, बल्कि सहायक उपकरणों, जागरूकता एवं शैक्षिक जीवन में प्रभावी भागीदारी की कमी है। नीतियों और कानूनों के प्रभाव ने शिक्षा क्षेत्र के परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। विकलांग बच्चों के अलावा विभिन्न सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक आधार वाले बच्चे अब नियमित स्कूलों में हैं। एक स्कूल की एक विशिष्ट कक्षा में अब विभिन्न सांस्कृतियों, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी होते हैं।शिक्षक के लिए कक्षा को अकादमिक और सामाजिक दोनों संदर्भों के रूप में समझना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि यह बातचीत संवाद और विविधता की सराहना करने का अवसर प्रदान करता है जो समावेशी शिक्षा के लिए एक समान अवसर और विकास के लिए योगदान देता है। समावेशी शिक्षा वंचित सामाजिक समूहोंके प्रतिभाशालीबच्चों की सभी जरूरतों को पूरा करती है।समावेशी शिक्षा को विकसित करने में एक बड़ी चुनौती बच्चे को सामाजिक संदर्भ में समझना है, क्योंकि इसकी आवश्यकताएं देश के भावी नागरिकों को विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। एक शिक्षक के रूप मेंआपको सामाजिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि को समझने की आवश्यकता होती है जिससे सीखने वाले विद्यार्थियों की योग्यता की विविधता को समझा जा सके। समावेशी शिक्षा विकसित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुणवत्ता में से एक है कि आप समावेशी शिक्षा की मांगों के प्रति मानवीय एवं उत्तरदायी हों।

समावेशी कक्षा में अधिगम प्रक्रिया– वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कक्षा–कक्ष के अंतर्गत शिक्षकों की क्रियाशीलता बदल गयी है। कक्षाओं में अब दिव्यांग विद्यार्थियों के अलावा वंचित और विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों के बच्चे होते हैं। एक शिक्षक के रूप में आपको सामाजिक, आर्थिक स्थिति और अक्षमता आदि पहलुओं पर विचार करने और बच्चे की आवश्यकता को समझने की आवश्यकता होती है। मूल रूप से विकलांग, संचार परिवर्तनशीलता और बौद्धिक विविधता में मौजूद विविधता की सीमा को संबोधित करने के लिए पाठ्यक्रम, निर्देश, और आकलन बनाने के लिए एक औसत छात्र के लिए शिक्षण अधिगम रणनीतियों के वैकल्पिक व्यवस्था की जरूरत है। समावेशी शिक्षण अधिगम का सिद्धांत सभी विभिन्न आवश्यकता वाले बच्चों के एक साथ समायोजन पर आधारित है। दिव्यांग विद्यार्थियों का समायोजन उचित प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव है, यह विश्वास विभिन्न क्षेत्रों जैसे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र व्यवहार विज्ञान आदि में शोध से उभरा है।

सीखना न केवल एक व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, बल्कि एक सामाजिक प्रक्रिया भी है। इसमें संसाधनों सहित, आसपास के वातावरण के साथ विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मध्य पारस्परिक अन्तःक्रिया होती है। शिक्षण प्रक्रिया, सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारकों (भाषा, मूल्यों, प्रेरणा एवं पारस्परिक व्यवहार) से प्रभावित होती है । इसलिए समावेशी शिक्षण अधिगम वातावरण विकसित करने के लिए शिक्षकों को उक्त सिद्धांतों का अनुकरण करना आवश्यक है–

1. विविध क्षमताओं, सीखने के विभिन्न तरीकों और उनके सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ सीखने वालों को स्वीकार करना। सीखने हेतु विशिष्ट आवश्यकता या अतिरिक्त चुनौतियों की पहचान करना एवं उनके समाधान हेतु आवश्यक प्रबंधन करना। जैसे ब्रेल का उपयोग, वैकल्पिक संचार प्रावधानों, आईसीटी आधारित शिक्षण विधियों को स्वीकार करना।

2. दिव्यांग विद्यार्थियों सहित सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने की सुविधा प्रदान करने हेतु अधिगम अनुकूल वातावरण बनाना, क्योंकि कक्षा–कक्ष में अंतःक्रिया हेतु आपसी संचार महत्वपूर्ण होता हैं जो विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रोत्साहित करता है। विद्यार्थियों की जिज्ञासा को जीवंत रखने के लिए एक ऐसे सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है जिसमें विद्यार्थी कक्षा में प्रश्न पूछने के लिए सक्रिय एवं स्वतंत्र रहें। बच्चे की सीखने की गति एवं अधिगम शैली के आधार पर अलग अलग शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे विभिन्न शिक्षण शैलियों एवं अनुभवों के साथ छात्रों की जरूरतों को समायोजित करना एवं शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में विभिन्न इंद्रियों का उपयोग द्वारा प्रशिक्षण देना।

3. सुलभ कक्षाओं को बनाने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन सिद्धांतों (UDL) का उपयोग करना। सभी को सीखने के लिए प्रेरित करना एवं सभी विद्यार्थियों की सहभागिता को सुनिश्चित करना, जिससे कक्षा क्रियाविधि में सभी को समान अवसर प्राप्त हो।सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन शिक्षकों के लिए एक दृष्टिकोण है जो दिव्यांग विद्यार्थियों की बाधाओं को कम करता है और सभी छात्रों के लिए सीखने के अवसर उपलब्ध कराता है। कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी की अपनी बुनियादी जरूरतें,योग्यताएं एवं रुचियां होती हैं। पाठ्यक्रम को इस माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए जिसमें प्रत्येक छात्र के लिए सीखने के समान अवसर उपलब्ध हो। राय (2019).

4. शिक्षक पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने, निर्देशात्मक रणनीतियों को संशोधित करने और छात्रों को उन तरीकों का आकलन करने के तरीके खोज रहे हैं जो उन्हें अपनी योग्यताओं को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करते हैं। इसलिए सभी के लिए समाधान यूनिवर्सल डिजाइन ऑफ लर्निंग के लिए उभरती हुई सर्वोत्तम व्यवस्था है। यह पाठ्यक्रम डिजाइन के हर क्षेत्र में कई सीखने के अवसर बनाने के बारे में सोचने का एक नया तरीका प्रदान करता है और शैक्षिक वातावरण को डिजाइन करने के लिए ऐसी रूपरेखा प्रदान करता है–

i- शिक्षा का अधिकार सभी बच्चों के लिए एक बुनियादी अधिकार है।

ii- प्रत्येक विद्यार्थी के अंदर हर विविध क्षमताएँ होती हैं जिनका विकास उचित प्रशिक्षण द्वारा किया जा सकता है।

iii- यह विद्यालय की जिम्मेदारी है कि वह सीखने की बाधाओं को समझे एवं विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पहचानें और उन्हें पूरा करें।

iv- एक समावेशी अधिगम प्रक्रिया सभी बच्चों के लिए सीखने की गुणवत्ता में सुधार करता है।

5. अधिगम को प्रभावी एवं स्थायी बनाने के लिए शिक्षकों को सहायक प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए, साथ ही यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि दिव्यांग विद्यार्थियों को जरूरत–आधारित सहायक उपकरणों और प्रौद्योगिकी तक पहुंच सुनिश्चित हो, जैसे ICT, कम्यूनिकेशन एडवांस

मोबिलिटी उपकरण, सीखने में सहायक उपकरण आदि। अधिगम प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को कम करना जैसे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यक्रम में आने वाली बाधाओं को पहचानना और कम करने के विकल्प की तलाश करना।

6. अपने समग्र पाठ्यक्रम की शिक्षण प्रक्रिया में विविधता को शामिल करना चाहिए क्योंकि विद्यार्थियों को शिक्षक सिखाने के लिए में एक माध्यमध्सुविधा के रूप में है। इसलिए अधिगम प्रक्रिया के वातावरण को बदलने में शिक्षक की भूमिका को समझने की आवश्यकता है। कभी–कभी शिक्षकों को 'सीखने' और 'सीखने में सुविधा' के मध्य का अंतर नहीं पता होता है, जो सीखने वाले और शिक्षकों के बीच दूरी पैदा करता है। शिक्षकों के रूप में शिक्षण और सीखने में सुविधा के बीच के अंतर को समझना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि दोनों शब्द एक–दूसरे के साथ संबद्ध हैं। शिक्षण आम तौर पर एक तरह से दृष्टिकोण है जहां शिक्षक सूचना को साझा करने या संबंधित जानकारी देने पर जोर देता है, जबकि शिक्षक किसी को सीखने और सक्रिय दृष्टिकोण के माध्यम से छात्र उन्मुख सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने में, भागीदारी में अपने अनुभव को, छात्रों के अनुभव से जोड़कर ज्ञान का निर्माण करता है।

विद्यार्थियों को समावेशी कक्षा में अधिगम हेतु आवश्यक कौशल–सीखने के लिए व्यावहारिक तरीके से पाठ के उद्देश्य के बारे में बताना जो छात्रों के लिए उपयोगी और प्रेरक दोनों हो सकता है।अधिगम के लिए कक्षा–कक्ष में छात्रों के समूह को छोटे–छोटे समूह में विभक्त करके ग्रुप स्टडी के लिए प्रेरित करना एवं कक्षा–कक्ष से संबंधित किसी भी निर्णय लेने में सभी शिक्षार्थियों की सहभागिता एवं सहमति लेना।

'यह परीक्षा के लिए आवश्यक है' या 'क्योंकि मेरे शिक्षक ने मुझे बताया था' प्रायः विद्यार्थियों की मानसिकता इसी पर आधारित रहती है।एक शिक्षक के रूप में, हमारी कक्षा के शिक्षण को वास्तविक दुनिया से जोड़कर कक्षा से परे जाना पड़ता है, जिससे छात्रों को यह सीखने में मदद मिलती है कि वे क्या सीख रहे हैं। सफल शिक्षण अधिगम का मानक है कि विद्यार्थियों ने क्या और कितना सीखा। शिक्षक के रूप में एक अच्छा पर्यवेक्षक–शिक्षकों को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया क्या है, उसकी कक्षा में सहभागिता किस प्रकार की है,कौन बोल रहा है और क्या बोल रहा है, उसके सभी विचारों को समझने की आवश्यकता है। ध्यान केवल उत्पाद को ही नहीं बल्कि प्रक्रिया को भी देने की जरूरत है। क्या शिक्षार्थी आपको वह उत्तर देता है जो आप चाहते हैं, लेकिन यह भी सुनना है कि वे अपने उत्तर कैसे और किस तरीके से देते हैं। एक अच्छा पर्यवेक्षक होने के लिए एक अच्छा श्रोता होना अति आवश्यक है।

समावेशी अधिगम प्रक्रिया के आवश्यक रूप–एक समावेशी कक्षा में लिंग, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, धर्म, भाषा, योग्यता या अक्षमता आदि के आधार पर किसी भी बच्चे को बिना भेदभाव शामिल किया जाता है। एक समावेशी कक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इस प्रक्रिया में छात्रों की अधिगम की जरूरतों के लिए मानक पाठ्यक्रम को समायोजित करने का प्रयास करते हैं।

विकलांग बच्चों की आवश्यकता के आधार पर रैंप, सुलभ शौचालय या अन्य सुविधाओं द्वारा स्कूल को बाधारहित बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। जब कोई दिव्यांग बच्चा पहली बार स्कूल में आता है तो परिवार के सदस्य के साथ बात करें,यह पता लगाएं बच्चे की विकलांगता क्या है और उसके बावजूद भी वह क्या कर सकता है उसके अंदर निहित योग्यताओं की पहचान कर उन योग्यताओं को विस्तार देना

है।रघुराम (2016) अधिकतर दिव्यांग ही सक्षम लोगों को यह सिखाते हैं कि जब जीवन में चुनौती आए तो खुद चुनौती को स्वीकार करो।"

समावेशी वातावरण विद्यार्थियों के मध्य एक स्वस्थ्य वातावरण बनाता है। शिक्षक बच्चों के साथ एक दोस्ताना तालमेल विकसित करता है और विद्यालय को विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाता है।पाठ्यक्रमों में किस प्रकार की विविधता की संभावना है, यह जानने के लिए छात्रों की उपलब्धि, पृष्ठभूमि के बारे में या अन्य माध्यमों से छात्रों की जानकारी को एकत्र कर सकते हैं। कक्षा में सभी छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल किया जाता है एवं उनकी योग्यताओं को ध्यान मंक रखा जाता है।

समावेशी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियाँ–दिव्यांग विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया में जो कठिनाइयाँ को दूर करना जैसे– आवागमन– शारीरिक बाधाएं मुख्य रूप से भौतिक संरचना के कारण होती हैं जो दिव्यांग विद्यार्थियोंको समुदाय का सक्रिय सदस्य बनने में बाधा उत्पन्न करती है। ये बाधाएँ इतनी गहरी होती हैं कि जो प्रभावित होते हैं वे भी उन्हें बाधाओं के रूप में नही ंबल्कि प्राकृतिक परिणाम या अपनी स्वयं की कमियों के कारण के रूप में देखने लगते हैं।एक कठोर पाठ्यक्रम जो कक्षा और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में एक निश्चित समूह को केंद्रित करता है जिसमें अधिक लचीलापन या विकल्प नहीं होते हैं। समावेशी शिक्षा के मूल्य पर जागरूकता की कमी, कक्षाओं में विविध विधार्थियों से निपटने में शिक्षकों के बीच ज्ञान और कौशल की कमी, कक्षाओं में स्पष्ट संचार का अभाव, अनुचित कक्षा प्रबंधन आदि बाधाएं हैं। इसलिए कक्षाओं में विविधता से निपटने के लिए शिक्षकोंद्वारा कक्षा में एक स्वस्थ्य प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है जो दिव्यांग विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा कर सके। वर्मा (2014). कुछ शिक्षकों का मानना है कि विकलांग बच्चों को मुख्यधारा के कक्षाओं में नियमित पाठ्यक्रम के साथनहीं पढ़ाया जा सकता है क्योंकि उन्हें विशेष और अलग विद्यालय की आवश्यकता होती है।सामान्य बच्चे उन बच्चों के साथ सहज नहीं हो सकते हैं जो अलग–अलग दिखते हैं और व्यवहार करते हैं। कई नियमितशिक्षकों के बीच यह भावना भी है कि विकलांगता वाले बच्चे की जिम्मेदारी स्वीकार करने से वेसामान्य बच्चों को समुचित समय नहीं दे सकेंगे।विकलांगता शारीरिक रूप में लोंगों से उतना नहीं छीनती जितना सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से वह उन्हें प्रभावित करती है। विकलांग व्यक्तियों के लिए भेदभाव मुक्त और समान जीवन का स्वप्न साकार करने के लिए संस्थागत प्रबंधों और कानूनी प्रावधानों में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता है लेकिन सबसे बड़ी आवश्यकता विकलांग व्यक्तियों के बारे में हमारी सोच में बदलाव की है। कुवारी (2013). इसलिए विकलांग लोगों की समस्या उनकी विकलांगता में नहीं है, वरन सामजिक जागरुकता की कमी है।

भाषा सिर्फ एक विषय नहीं हैय यह उन कौशलों की एक श्रृंखला है जो बच्चों को पाठ्यक्रम तक पहुंचने और उन्हें सोचने और सीखने में मदद करने के लिए आवश्यक है। उन्हें अधिक से अधिक परिस्थितियों में बात करने, सुनने, पढ़ने और लिखने में सक्षम बनाने की आवश्यकता है। आप बच्चों को इन विषयों को सीखने और खेल विधि के माध्यम से सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। गणित और भाषा के खेल सीखने के साथ–साथ अर्थपूर्ण भी बना सकते हैं। यदि आप शिक्षकों या माता–पिता के समूह के साथ काम करने में सक्षम हैं, तो कक्षा में उपयोग के लिए कई खेल विकसित किए जा सकते हैं। व्यावहारिक सामग्री का उपयोग करके और रोजमर्रा की जिंदगी में आम समस्याओं को हल करके गणित को अधिक सार्थक बनाया जा सकता है। ये समस्याएं स्कूल के आसपास, घर पर या बाजार में माप और गणना से संबंधित हो सकती हैं।विज्ञान में, ठोस अनुभव बच्चों को वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझने में मदद करते

हैं। विज्ञान अधिगम प्रक्रिया में, छात्र अपने अवलोकन कौशल का अभ्यास कर सकते हैं। उन्हें प्रश्न पूछने और अपने स्वयं के प्रश्नों के विभिन्न उत्तरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चों को उनके स्थानीय क्षेत्र की जांच करके, समाज में विज्ञान द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका से परिचित कराया जा सकता है। वे मूल्यवान वैज्ञानिक अवधारणाओं और कौशलों को सीखते हुए सामुदायिक समस्याओं के व्यावहारिक समाधान पा सकते हैं।

कक्षा प्रबंधन– प्रभावी कक्षा प्रबंधन दिव्यांग विद्यार्थियों सहित सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने की कुंजी है। इसलिए यह सबसे महत्वपूर्ण कौशल है जिसे आपको एक नए शिक्षक के रूप में प्राप्त करना चाहिए। कक्षा प्रबंधन से तात्पर्य कक्षा के वातावरण से है जो एक शिक्षक बच्चों के सीखने के सभी पहलुओं को बढ़ावा देने के लिए बनाता है और इसमें वे प्रक्रियाएँ, रणनीतियाँ और निर्देशात्मक विधियाँ शामिल हैं जिनका उपयोग शिक्षक बच्चों के आचरण को विकसित करने के अलावा व्यक्तिगत / समूह शिक्षण गतिविधियों को आयोजित करने और उनके व्यवहार को प्रबंधित करने के लिए करते हैं। सुनने, देखने और सीखने की कठिनाइयों वाले दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे शिक्षक और ब्लैकबोर्ड के निकट बैठें जिससे वे शिक्षकों को स्पष्ट रूप से देख सकें और शिक्षक उन्हें आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक सहायता भी प्रदान कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ

कुमारी, आर. (2013). विकलांगता विशेषांक, *योजना*, अप्रैल, 57(04), नई दिल्ली, 05.
योजना (2016) : नई दिल्ली, जनवरी, पृ० सं०33.
राय, ए. एस.) 2019). प्रभावी अधिगम का एकमेव विकल्प अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प, *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, *39*(3), 39-46.
रघुरामन, एन.(2016). दैनिक भास्कर, 27 दिसम्बर, नागपुर.
वर्मा, ए. के. (2014). समावेशी शिक्षा, *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, *35*(2), 24-29.
शाह, एस. (2017). हेरिटेज आर्किटेक्ट और एक्सेस सलाहकार, *इंडिया टुडे,*फरवरी, 43.